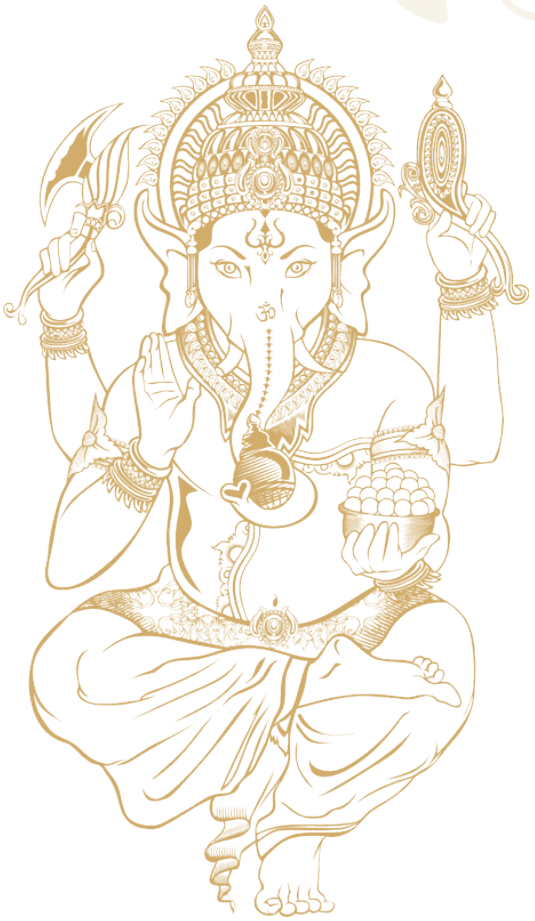

Mr.

Ms.

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121724502

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
20/11/1994 :	जन्म तिथि	: 03/03/2003
रविवार :	दिन	: सोमवार
घंटे 12:30:00 :	जन्म समय	: 07:15:00 घंटे
घटी 14:09:06 :	जन्म समय(घटी)	: 01:16:15 घटी
India :	देश	: India
Rohru :	स्थान	: Rohru
31:12:00 उत्तर :	अक्षांश	: 31:12:00 उत्तर
77:45:00 पूर्व :	रेखांश	: 77:45:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:19:00 :	स्थानिक संस्कार	: -00:19:00 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
06:50:21 :	सूर्योदय	: 06:44:30
17:18:40 :	सूर्यास्त	: 18:18:04
23:47:19 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:53:50

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
मंगल 5वर्ष 9मा 21दि	26:27:42	मक	लग्न	कुंभ	27:53:12	राहु 3वर्ष 0मा 5दि
गुरु	03:56:08	वृश्चि	सूर्य	कुंभ	18:09:52	शनि
11/09/2018	25:36:03	वृष	चंद्र	कुंभ	17:46:02	08/03/2022
11/09/2034	29:06:54	कर्क	मंगल	धनु	04:56:45	08/03/2041
गुरु 30/10/2020	20:39:39	तुला	बुध	कुंभ	02:46:11	शनि 11/03/2025
शनि 13/05/2023	01:59:39	वृश्चि	गुरु व	कर्क	15:45:15	बुध 19/11/2027
बुध 18/08/2025	08:55:55	तुला व	शुक्र	मक	06:44:41	केतु 28/12/2028
केतु 25/07/2026	11:59:43	कुंभ	शनि	वृष	28:18:37	शुक्र 27/02/2032
शुक्र 25/03/2029	21:01:16	तुला व	राहु व	वृष	09:16:06	सूर्य 08/02/2033
सूर्य 11/01/2030	21:01:16	मेष व	केतु व	वृश्चि	09:16:06	चन्द्र 09/09/2034
चन्द्र 13/05/2031	29:36:09	धनु	हर्ष	कुंभ	05:39:59	मंगल 19/10/2035
मंगल 18/04/2032	27:25:37	धनु	नेप	मक	17:54:16	राहु 25/08/2038
राहु 11/09/2034	04:10:20	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	25:56:28	गुरु 08/03/2041

लग्न-चलित

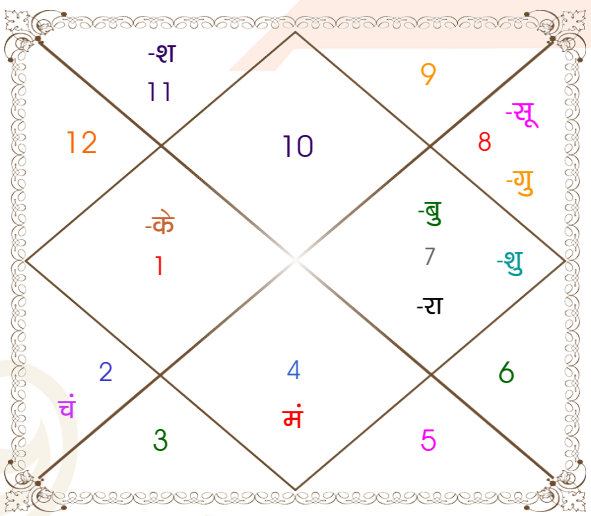

लग्न-चलित

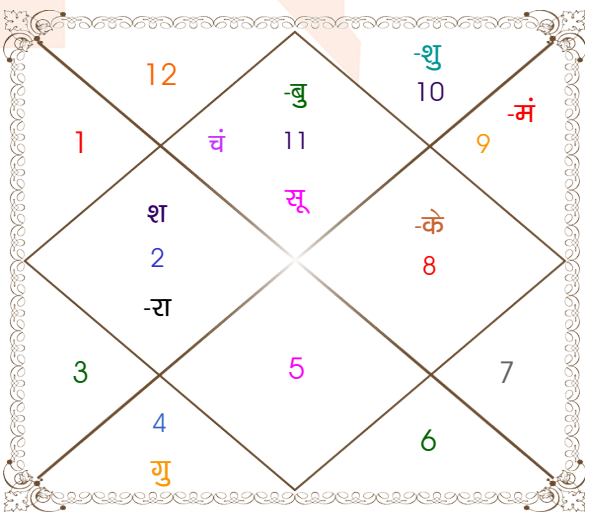

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	सर्प	अश्व	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	शनि	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृष	कुम्भ	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

Mr. का वर्ग मृग है तथा Ms. का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr. और Ms. का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

चतुः सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।
कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है। क्योंकि मंगल Mr. कि कुण्डली में सप्तम् भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Mr. कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत्।।

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि Mr. कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Ms. मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल Ms. कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Mr. तथा Ms. में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।